वानिकी समाचार

वर्ष–6 >> जनवरी–जून 2014 >> अंक–1 >>

रेगिस्तानीकरण को रोकने के लिए विश्व दिवस

भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद् तथा पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 17 जून 2014 को रेगिस्तानीकरण को रोकने के लिए विश्व दिवस (डब्ल्यू.डी.सी.डी.) का आयोजन किया गया। रेगिस्तानीकरण को रोकने के लिए इस वर्ष का विश्व दिवस, पारि–पद्धति अनुकूलन पर आधारित था, जिसका मूलमंत्र है *"भूमि, भविष्य की धरोहर है इसे जलवायु परिवर्तन से बचाएं"*। वर्ष 2014 का रेगिस्तानीकरण को रोकने के लिए विश्व दिवस, सतत् भूमि प्रबन्धन नीतियों और पद्धतियों को जलवायु परिवर्तन के प्रति हमारे सामूहिक प्रभावों को मुख्य धारा में लाने के लाभों पर विशेष बल देता है। श्री प्रकाश जावड़ेकर, माननीय मंत्री, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। माननीय मंत्री महोदय ने कहा कि रेगिस्तानीकरण, जैव–विविधता अपक्षय और जलवायु परिवर्तन, सतत् विकास के लिए गम्भीर चुनौतियां है। उन्होने कहा कि भूमि का निम्नीकरण, मुख्यतः घास – भूमियों में कमी और कृषि के दबाव के कारण वनाच्छादन में कमी हो रही है। यद्यपि भूमि निम्नीकरण रेगिस्तानीकरण के आंकड़े हमारे लिए चिन्ता का कारण हैं, तथापि लोगों द्वारा संयुक्त प्रयास करने पर इन्हें रोका या कम किया जा सकता है। मंत्री महोदय ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा कि उन्हें महाराष्ट्र में ग्यारह जलसंभरों पर कार्य करने का अनुभव है, जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि हम भारत को रेगिस्तानीकरण से मुक्त कर सकते हैं। यदि पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, कृषि मंत्रालय, भूमि संसाधन विभाग, जल संसाधन मंत्रालय तथा अन्य हितधारकों द्वारा इस दिशा में निरंतर प्रयास किया गया तो वर्ष 2030 तक हमारे देश में भूमि निम्नीकरण प्रायः समाप्त हो जायेगा।

इस अवसर पर माननीय मंत्री महोदय ने भारतीय वानिकी एवं शिक्षा परिषद् द्वारा भारत में सतत् भूमि तथा पारितंत्र प्रबन्धन परियोजना पर एक संक्षिप्त वृत्त–चित्र का विमोचन किया जिसमें देश के विभिन्न कृषि तथा पारितंत्रीय भागों में रहने वाले परियोजना सहयोगियों द्वारा स्लेम द्वारा सुझाये गये उपायों पर विशेष जोर दिया गया है।

इसके अतिरिक्त, माननीय मंत्री महोदय ने श्री जादव पयेंग (असम), श्री रानाराम बिश्नोई (राजस्थान) तथा गुजरात के "पारितंत्रीय सुरक्षा संघ" को निम्नीकृत भूमि तथा पारिपद्धति के पुनर्स्थापन के लिए सम्मानित किया।

तकनीकी सत्र में पारिपद्धति आधारित अनुकूलन के अनुभवों पर विचार – विमर्श किया गया। सत्र की अध्यक्षता श्री सुशील कुमार, अतिरिक्त सचिव तथा सह–अध्यक्षता, श्री बी.एम.एस. राठौड़, संयुक्त सचिव, पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन द्वारा की गई। भा.वा.अ.शि.प. के श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार), डॉ. टी. पी. सिंह, सहायक महानिदेशक (जैवविविधता संरक्षण), डॉ. अनीता श्रीवास्तव, परियोजना प्रबन्धक, डॉ. आर. एस. रावत, तकनीकी प्रबन्धक, तथा परामर्शी स्लेम परियोजना, ने भी विचार–विमर्श में भाग लिया।

इस अवसर पर शु.व.अ.सं., जोधपुर में रोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया तथा स्कूली बच्चों के लिए वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया।

"चंदन काष्ठ : वर्तमान प्रवृत्तियां तथा भविष्य की संभावनायें" विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन

का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर द्वारा दिनांक 26 से 28 फरवरी 2014 तक "चंदन काष्ठ : वर्तमान प्रवृत्तियां तथा भविष्य की संभावनायें" विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया गया। सेमीनार का उद्घाटन महामहिम, राज्यपाल, कर्नाटक डॉ. हंसराज्य भारद्वाज द्वारा डॉ. वीरप्पा मोइली, केंद्रीय मंत्री पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस तथा मंत्री पर्यावरण एवं वन मंत्रालय भारत सरकार तथा डॉ. एस. एस. गर्ब्याल, महानिदेशक (वन) एवं विशेष सचिव भारत सरकार, की उपस्थिति में किया गया।

श्री प्रकाश जावड़ेकर, माननीय मंत्री, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन, रेगिस्तानीकरण को रोकने हेतु विश्व दिवस के अवसर पर दीप प्रज्जवलित करते हुये। नई दिल्ली दिनांक 17 जून 2014

अपने भाषण में महामहिम डॉ. हंसराज भारद्वाज ने कहा कि कर्नाटक तथा तमिलनाडु चन्दन काष्ठ के मुख्य स्रोत हैं और इन राज्यों में चन्दन के प्राकृतिक वासस्थलों में अत्यन्त कमी आई है। उन्होने कहा कि केन्द्र तथा राज्य सरकारों द्वारा उपयुक्त नीतियां तथा रणनीतियां बनाकर इस प्रजाति का संरक्षण करना चाहिए। महामहिम राज्यपाल ने श्रीमती आर. ए. श्रीमथी को सम्मानित किया जो 83 वर्ष की हैं और जिन्होने चन्दन काष्ठ पर अग्रगामी अनुसन्धान किया है।

राज्य मंत्री डॉ. एम. वीरप्पा मोइली ने चन्दन काष्ठ के प्रति अपने लगाव के बारे में बताया और कहा कि दुनिया में भारत का चन्दन काष्ठ सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। उन्होने जोर देकर कहा कि चन्दन का काष्ठ कर्नाटक का गौरव है और प्रत्येक घर व कार्यालयों में चन्दन का वृक्ष होना चाहिए।

डॉ. एस. एस. गर्ब्याल, महानिदेशक (वन) एवं विशेष सचिव, भारत सरकार एवं महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने चन्दन की वर्तमान स्थिति और इस प्रजाति को बचाने हेतु किये गये प्रयासों पर सारगर्भित भाषण दिया। इसके पूर्व स्वागत भाषण में डॉ. वी. रमाकान्त, निदेशक, का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर ने महाराज मैसूर, श्री कृष्णराज वोडियार चतुर्थ को याद किया जो राज ऋषि के नाम से प्रसिद्ध थे, जिन्होने चन्दन काष्ठ के महत्व को जाना और 1938 में वन अनुसन्धान प्रयोगशाला की स्थापना की जो अब का. वि.प्रौ.सं. के नाम से एक विकसित संस्थान है।

इस अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार में चन्दन की विभिन्न प्रजातियां उगाने वाले देशों यथाः आस्ट्रेलिया, फिजी, हवाई, प्रशान्त द्वीप समूह और श्रीलंका ने अपने प्रस्तुतीकरण दिये। यह सेमीनार का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर में वर्ष पर्यन्त होने वाले प्लेटीनम जुबली समारोह का एक भाग था।

का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर में "चन्दन काष्ठः वर्तमान प्रवृत्तियां तथा भविष्य की सम्भावनायें" पर अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार

कैज्यूरियाना पर पांचवीं अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने आई.यू.एफ.आर.ओ. कार्य दल एस2.08.02, नाइट्रोजन फिक्स करने वाले वृक्षों का सुधार एवं संवृद्धि के तत्वाधान में दिनांक 03 से 07 फरवरी 2014 तक ममालपुरम, चेन्नई में पांचवी अन्तर्राष्ट्रीय कैज्यूरियाना कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का उद्देश्य, इन महत्वपूर्ण प्रजातियों के वर्ग के सम्बन्ध में ज्ञान को अद्यतन करने के लिए अनुसन्धानकर्ताओं तथा प्रबन्धकों को एक मंच पर लाना था ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में जीविकोपार्जन में सुधार लाने हेतु परिणामों का प्रभावशाली ढंग से प्रयोग किया जा सके, जैसा कार्यशाला के शीर्षक से स्पष्ट है : ग्रामीण आजीविका को सुरक्षित करने के लिए कैज्यूरियाना में सुधार। कार्यशाला में कुल 80 प्रतिभागी सम्मिलित हुए जिनमे से बीस प्रतिनिधि विभिन्न देशों यथा : आस्ट्रेलिया, बांग्लादेश, चीन, फ्रांस, माली, फिलीपाईन्स, सेनेगल, थाईलैन्ड और यू.एस.ए.में से थे।

कार्यशाला का उद्घाटन डॉ. वी. राजगोपालन, तत्कालीन सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा किया गया । श्री ए. के. श्रीवास्तव, अतिरिक्त महानिदेशक वन, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा मुख्य सम्बोधन दिया गया। डॉ. पी. बालकृष्ण पिसुपती, अध्यक्ष, राष्ट्रीय जैवविविधता प्राधिकारण,श्री खोंगसक पिंयोपूसारेक, आनरेरी फेलो, सी.एस.आई.आर.ओ., आस्ट्रेलिया, डॉ. अन्टोनी कलिंगेनायर, आई.यू.एफ.आर.ओ. कार्यदल संयोजक, माली, सम्मानयीय अतिथि थे। डॉ. एन कृष्णकुमार, निदेशक, व.आ.वृ. प्र.सं. ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उद्घाटन भाषण में डॉ. राजगोपालन ने सभा को ''हरित भारत मिशन'' के बारे में बताया, जिसमे भारत में वृक्षाच्छादन की वृद्धि पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। उन्होने बताया कि इस समय देश के 22 प्रतिशत क्षेत्र में वृक्षाच्छादन है और वृक्षाच्छादन को 33 प्रतिशत तक बढ़ाने के लिए कैज्यूरियान जैसी कृषि–वानिकी प्रजातियां अत्यन्त महत्वपूर्ण है तथा इस प्रजाति के सुधार के लिए फन्ड भी उपलब्ध है।

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय ने व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर को वन आनुवंशिकी संसाधन एवं वृक्ष सुधार हेतु इन्विस केन्द्र स्थापित करने की मान्यता प्रदान की है जिसका उद्घाटन डॉ. बी. राजगोपालन द्वारा दिनांक 03 फरवरी 2014 को किया गया।

भा.वा.अ.शि.प. की विदेशों में हुई बैठकें/कार्यशाला/सेमीनार में भागीदारी

डॉ. ए. बालु, वैज्ञानिक – एफ; डॉ. ए. कार्तिकेयन, वैज्ञानिक – डी; डॉ. महेश्वर हेग्ड़े, वैज्ञानिक – डी तथा डॉ. ए. शान्ती, वैज्ञानिक – डी, व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने दिनांक 18 से 21 मार्च 2014 तक हयू, वियतनाम में अकेसिया 2014 सम्मेलन में भाग लिया जिसमें अकेसिया रोपण वानिकी पर विशेष ध्यान दिया गया। इस सम्मेलन का आयोजन वियतनाम वानिकी विज्ञान अकादमी, सी.एस.आई.आर.ओ. आस्ट्रेलिया, तस्मानिया विश्वविद्यालय तथा एशिया प्रशान्त वानिकी अनुसन्धान संघ द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार) तथा डॉ. टी. पी. सिंह, सहायक महानिदेशक (जैव–विविधता एवं जलवायु परिवर्तन) भा.वा.अ.शि.प. ने "2014 रिपोर्टिंग एक्सरसाईज फॉर द कन्ट्री पार्टीज ऑफ द रीजनल इम्पलीमेंटेशन एनेक्स फॉर एशिया" में भाग लिया, जिसका आयोजन दिनांक 7 से 9 मई 2014 तक इंचीयोन, कोरिया रिपब्लिक में रेगिस्तानीकरण रोकने के लिए संयुक्त राष्ट्र की धारणा के अनुरूप किया गया था।

कार्यशालाएं/सेमीनार/बैठकें आदि

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून द्वारा निम्नलिखित कार्यशालायें आयोजित की गई :

- "यू.एन.सी.सी.डी. सचिवालय की छठीं राष्ट्रीय रिपोर्ट प्रगति की समीक्षा" पर 15 मई 2014 को भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र, नई दिल्ली में कार्यशाला।
- "भारत में आर.ई.डी.डी + : समस्या एवं चुनौतियों" पर भा.व.से. अधिकारियों के लिए दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला, जिसे पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित किया गया था दिनांक 23 तथा 24 जून 2014 को भा.वा.अ.शि.प., देहरादून में आयोजित किया गया था।

व.अ.सं., देहरादून द्वारा निम्नलिखित कार्यशालाओं का आयोजन किया :

- "काष्ठ आधारित उद्योगों के लिए प्रकाष्ठ की निरंतर आपूर्ति करने में कृषि वानिकी की भूमिका" पर जी.बी. पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पन्तनगर में दिनांक 13 जनवरी 2014 को एक दिवसीय कार्यशाला सह–किसान मेला।

"काष्ठ आधारित उद्योगों को प्रकाष्ठ की निरंतर आपूर्ति हेतु कृषि वानिकी की भूमिका" पर दिनांक 13 जनवरी 2014 को जी.बी.पी.यू.ए.टी., पंतनगर में कार्यशाला–सह–किसान मेला

- "वन बीज विज्ञान पर आधुनिक खोजें तथा चुनौतियां" पर दिनांक 26–27 फरवरी 2014 को व.अ.सं. द्वारा राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन जिसमें विभिन्न अनुसन्धान संस्थानों तथा विश्वविद्यालय के करीब 100 प्रतिनिधि ने भाग लिया।

उ.व.अ.सं., जबलपुर ने ओ.टी.एस.जी. से भा.वा.अ.शि.प. के तहत वन रेंजर्स कॉलेज, अंगुल उड़ीसा में दिनांक 12 और 13 मार्च 2014 को प्रशिक्षण–सह–कार्यशाला का आयोजन किया जिसका उद्देश्य भा.वा.अ.शि.प. तथा उसके संस्थानों के अनुसन्धान निष्कर्षों के विस्तार हेतु शक्तिशाली नेटवर्क तैयार करना था। इस कार्यशाला में अड़तालीस प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें तेंतीस महिला प्रतिभागी और संस्थान तथा उड़ीसा वन विभाग के अन्य अधिकारी शामिल थे। इसी तरह की प्रशिक्षण–सह–कार्यशाला का आयोजन छत्तीसगढ़ राज्य के लिए दिनांक 29 मई 2014 को बिलासपुर में भी किया गया।

व.व.अ.सं., जोरहाट द्वारा निम्नलिखित कार्यशालाओं का आयोजन किया गया :

- "उत्पत्ति अवस्था में आय बढ़ाने के लिए अन्तः फसलों की उपयोगिता" पर दिनांक 21 से 23 जनवरी 2014 तक क्षेत्रीय केन्द्र, राष्ट्रीय वनीकरण एवं पारि–विकास बोर्ड, शीलांग, मेघालय के साथ संयुक्त रूप से तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में विभिन्न राज्यों के कुल पच्चीस वन अधिकारियों ने भाग लिया।

- "भारत में बांस अनुसन्धान और विकास पर की गई खोजों" पर दिनांक 06 से 07 फरवरी 2014 को जोरहाट में दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन डॉ. जी. एस. गोराया, उप महानिदेशक (अनुसन्धान),भा.वा.अ.शि.प देहरादून द्वारा किया गया। डॉ. एन. एस. बिष्ट, निदेशक, व.व.अ.स ने सभी प्रतिनिधियों, अतिथियों, पदाधारियों तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया। डॉ. के. जी. प्रसाद, पूर्व निदेशक, व.व.अ.सं. ने मुख्य भाषण दिया। सह– आयोजन के रूप में बांस–शिल्प मेले का आयोजन किया गया जिसमें असम, मणिपुर, त्रिपुरा और नागालैण्ड के शिल्पकारों ने भाग लिया तथा अपने उत्पादों का प्रदर्शन किया।

बांस–शिल्प मेले में मणिपुर, त्रिपुरा और नागालैण्ड के उत्पादों का प्रदर्शन

व.उ.सं., रांची द्वारा उड़ीसा वन सेक्टर विकास परियोजना, भुवनेश्वर में दिनांक 26 मार्च 2014 को "उड़ीसा में फासी *(अनोगीसस एकूमिनेटा)* के सांवर्धनिक अध्ययन" पर मुख्य समीक्षा कार्यशाला का आयोजन किया गया। संस्थान द्वारा "दुर्लभ, संकटापन्न और खतरे में पड़ी पादप प्रजातियों" पर भी व.उ.सं., रांची में 29 मार्च 2014 को कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का निधिकरण पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार के "झारखण्ड़ के मुख्य वानस्पतिक उद्यान में दुर्लभ और खतरे में पड़ी प्रजातियों के परस्थानिक संरक्षण के लिए संरचनात्मक सुविधायें", नामक परियोजना के तहत किया गया।

"फासी *(अनोगीसस एकूमिनेटा)* के वृक्ष संवर्धन" पर
समीक्षित कार्यशाला दिनांक 26 मार्च 2014 ओ.एफ.एस.डी.पी., भुवनेश्वर

डायरैक्ट टू कन्ज्यूमर योजना

शु.व.अ.सं., जोधपुर द्वारा 23 और 24 जनवरी 2014 को वर्षाजल संग्रहण तथा निम्नीकृत पर्वतीय भागों में वनीकरण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

व.उ.सं., रांची द्वारा 27 मार्च 2014 को "गैर परम्परागत परपोषी *फ्लेमिंजिया* प्रजाति से लाख की खेती की सम्भावना तथा वानिकी में इसके निरन्तर रोपण की सम्भावनायें" नामक परियोजना के तहत प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमे पच्चीस हितधारकों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

व.अ.सं., देहरादून ने निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये :

- दिनांक 08 से 10 जनवरी तक "कृषि–वानिकी पद्धतियों के विकास" पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें गैर सरकारी संगठनों, पंचायत सदस्यों, जे.एफ.एम.सी.एस., डब्ल्यू.एस.एम.सी.एस. तथा उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा तथा चन्डीगढ़ के पारितंत्रीय संगठनों ने भाग लिया।
- स्थानीय एम.एस.सी. विद्यार्थियों, किसानों और स्वालम्बी वर्ग की महिलाओं हेतु दिनांक 20 जनवरी से 10 फरवरी 2014 तक बागबान ग्रामोद्योग समिति (गैर सरकारी संगठन) के सहयोग से खाद्य एवं औषधीय मशरूमों के लिए स्थलीय तैयारी, पृथक्करण, शुद्धिकरण तथा उत्पत्ति पर क्षमतावृद्धि प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- "सगंध तेलों, इत्रसाजी तथा गंध चिकित्सा" पर दिनांक 09 से 13 जून 2014 तक फ्रेग्रेन्स तथा फ्लेवर विकास केन्द्र (एफ.एफ.डी.सी.), कन्नौज के सहयोग से पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में छियालीस भागीदारों ने भाग लिया, जिनमें उन्नीस भागीदार रवान्डा गणराज्य, एक यू.एस.ए. तथा शेष भारत के विभिन्न भागों से आये थे।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया :

- "कृषि–वानिकी मॉडल–स्थापना एवं प्रबन्धन" पर दिनांक 21 से 23 जनवरी 2014 तक तीन दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिसे पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई–दिल्ली द्वारा हितधारकों जैसे जन–प्रतिनिधियों, गैर सरकारी संगठनों, शैक्षिक संस्थानों प्रेस–मीडिया तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए प्रायोजित किया गया था। प्रशिक्षण कार्यक्रम में तमिलनाडु के तिरूनेल्वली तथा थोनी जिलों के भागीदार उपस्थित थे।
- दिनांक 12 से 14 फरवरी 2014 तक अन्य सरकारी विभागों के अधिकारियों के लिए वन्य जीव एवं पर्यावरण पर सुग्राहयता कोर्स आयोजित किया गया। इसमें तमिलनाडु राज्य विभागों यथा : बागवानी, पशुपालन, पुलिस, केन्द्र सरकार के संगठन जैसे रेलवे, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस फोर्स तथा गन्ना प्रजनन संस्थान के तेईस भागीदार शामिल हुये।

का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर ने निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये :

- पर्यावरण एवं वन मंत्रालय की योजना "अन्य सेवाओं के कार्मिकों को प्रशिक्षण" के तहत 04 से 06 फरवरी 2014 तक वन, वन्यजीव एवं पर्यावरण संरक्षण पर तीन दिवसीय जागरूकता अभियान का आयोजन। इसमें विभिन्न विभागों के 27 वर्ग "ख" अधिकारियों ने भाग लिया।
- 17 से 21 फरवरी 2014 तक पौधशाला और रोपणों में चन्दन के बीजों का प्रहस्तन पर वार्षिक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस पांच दिवसीय कार्यक्रम में देश के विभिन्न भागों से आये 15 किसानों ने भाग लिया।
- विकास आयुक्त (हस्तशिल्प), टेक्सटाईल मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली की मानव संसाधन विकास योजना के तहत 10 से 14 मार्च 2014 तक चन्नपटना में शिल्पकारों की क्षमता वृद्धि पर प्रशिक्षण। प्रशिक्षण उद्देश्य शिल्पकारों को रोपण प्रकाष्ठ के तहत उपयोजन तथा आधुनिक उपकरणों के प्रयोग के बारे में बताना था। चन्नपटना से बीस काष्ठ शिल्पियों ने प्रशिक्षण में भाग लिया।

व.व.अ.सं., जोरहाट ने निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये :

- दिनांक 03 से 05 मार्च 2014 तक "तितलियों की पहचान, पारितंत्रीय गुणवत्ता, क्षमता तथा उत्तर–पूर्वी भारत में जीविकोपार्जन एक स्रोत के रूप में पारिपर्यटन" विषय पर प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में दो मुख्य वन्य जीव वार्डनों सहित कुल ग्यारह फॉरेस्टरों ने भाग लिया।

• अगरबत्तियों की सीकें बनाने के लिए कराना, जोरहाट के दस महिला स्वयं सहायता समूहों का प्रशिक्षण दिनांक 21 मार्च 2014 | इस कार्यक्रम में कुल तीस भागीदार उपस्थित हुये।

जोरहाट में अगरबत्ती की सीकें बनाने का प्रशिक्षण

हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम :

• दिनांक 25 फरवरी 2014 को नोगली, रामपुर, जिला शिमला (हि.प्र.) में "उच्च मूल्य के औषधीय पादपों की खेती" पर एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। किन्नौर तथा रामपुर क्षेत्र के चवालीस किसान तथा रामपुर वन प्रभाग के अग्रगामी स्टॉफ ने इसमें भाग लिया।

• दिनांक 20 मार्च 2014 को किश्तवाड़, जम्मू में "उच्च मूल्य के शीतोष्ण औषधीय पादपों की खेती और सम्बन्धित समस्याओं" पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें चिनाव घाटी (जम्मू क्षेत्र) के चालीस प्रगतिशील किसानों तथा किश्तवाड़ वन प्रभाग के अग्रगामी स्टॉफ ने भाग लिया।

शु.व.अ.सं., जोधपुर में दिनांक 11 मार्च 2014 को खेजरी की मृत्यता तथा आरडू और देशी बबूल में जैव उर्वरकों का प्रयोग पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें पच्चीस प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया।

व.उ.सं., रांची ने दिनांक 8 से 10 फरवरी 2014 तक "उत्पादन हेतु मृदा की पहचान" पर वानिकी क्षेत्र में क्षमता वृद्धि के लिए तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसे पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा प्रायोजित किया गया। कार्यशाला में विभिन्न सरकारी, गैर सरकारी संगठनों के सदस्यों तथा प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया।

व.जै.सं., हैदराबाद ने दिनांक 21 से 23 फरवरी 2014 तक आन्ध्र प्रदेश वन अकादमी, हैदराबाद में किसानों तथा अन्य हितधारकों के लिए औषधीय पादपों की खेती पर प्रशिक्षण का आयोजन किया।

सतत् भूमि तथा पारितंत्र प्रबन्धन (स्लेम)

स्लेम–टी.एफ.ओ. द्वारा दिनांक 28 जनवरी 2014 को इंडिया हेवीटाट सेन्टर, नई दिल्ली में "रेगिस्तानीकरण, भूमि निम्नीकरण तथा सूखे (डी.एल.डी.डी.) से सम्बन्धित विषयों की सूचक संरचना को अन्तिम रूप देने के लिए" राष्ट्रीय परामर्शी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें मंत्रालयों, अनुसन्धान एवं विकास संस्थानों, स्लेम भागीदारों, यू.एन. निधिकरण निकायों तथा सिविल सोसाइटी संगठनों के करीब 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्घाटन श्री सुशील कुमार, अतिरिक्त सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री बी.एम.एस. राठौड़, संयुक्त सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली, श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार) तथा डॉ. टी. पी. सिंह, परियोजना निदेशक स्लेम, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून भी उपस्थित थे।

"रेगिस्तानीकरण, भूमि निम्नीकरण तथा सूखे (डी.एल.डी.डी.) से सम्बन्धित विषयों की सूचक संरचना को अन्तिम रूप देने के लिए" राष्ट्रीय परामर्शी कार्यशाला

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने भारत में परियोजना नीति, सतत् भूमि एवं पारि–पद्धति प्रबन्धन (स्लेम) पर "सतत् आजीविका के लिए भूमि पुनरूद्धार एवं जैवविविधता संरक्षण" हेतु दिनांक 19 से 21 फरवरी 2014 तक तीन दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया। यह प्रशिक्षण कई विभागों यथाः एस.ए.सी.ओ.एन., तमिलनाडु राज्य कृषि विभाग, बागवानी विभाग, वन विभाग, केरल वन अनुसन्धान संस्थान (के.एफ.आर.ए.), पीची, केरल, वैज्ञानिक एवं अनुसन्धान अधिकारी, भा.वा.अ.शि.प. (शु.व.अ.सं., जोधपुर; उ.व.अ.सं., जबलपुर; व.उ.सं., रांची; वा.अ.मा.सं.वि.कें, छिंदवाडा; व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर), गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि तथा वृक्ष उत्पादक संघ के लिए था ।

का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर ने स्लेम परियोजना के तहत दिनांक 24 से 26 अप्रैल 2014 तक "सतत् भूमि एवं पारि–पद्धति प्रबन्धन : समस्यायें तथा अपेक्षायें" विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया। यह प्रशिक्षण कर्नाटक के विभिन्न सरकारी विभागों, वन विभागों, वैज्ञानिकों तथा गैर सरकारी संगठनों के अधिकारियों के लिए किया गया था। प्रशिक्षण में कुल 30 सदस्यों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार), भा.वा.अ.शि.प. द्वारा किया गया जो इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर डॉ. टी.पी.सिंह, सहायक महानिदेशक (जलवायु परिवर्तन) तथा राष्ट्रीय परियोजना निदेशक (स्लेम), भा.वा.अ. शि.प. सम्माननीय अतिथि थे। मुख्य अतिथि ने अपने सारगर्भित भाषण में स्लेम पर समग्र प्रस्तुतीकरण दिया, साथ ही स्लेम के उद्देश्यों और अगले फेज में होने वाले क्रियाकलापों के बारे में बताया। उन्होने विभिन्न संस्थानों द्वारा की गई खोजों के प्रभावशाली प्रसार और प्रदर्शन करने पर जोर दिया।

उ.व.अ.सं., जबलपुर ने "जीविकोपार्जन के अवसर बढ़ाने हेतु किसानों और शिल्पकारों के लिए बांस आधारित हस्तशिल्प" पर स्लेम–सी.पी.पी. परियोजना के तहत दिनांक 03 से 07 फरवरी 2014 तक विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

उ.व.अ.सं., जबलपुर में स्लेम–सी.पी.पी. परियोजना के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम

बांस तकनीकी सहायता वर्ग (बी.टी.एस.जी.), भा.वा.अ.शि.प. प्रशिक्षण/बैठकें इत्यादि

बी.टी.एस.जी.–भा.वा.अ.शि.प., देहरादून द्वारा श्री संजय कुमार, उप महानिदेशक (एन.बी.एम.) तथा राष्ट्रीय बांस मिशन के अन्य अधिकारियों के साथ दिनांक 08 मार्च 2014 को वन विज्ञान भवन, नई दिल्ली में डॉ. जी. एस. गौराया, उप महानिदेशक (अनुसन्धान), भा.वा.अ.शि.प. की अध्यक्षता में बैठक की गई। बैठक में बी.टी.एस.जी.–भा.वा.अ.शि.प. को दिये गये क्रिया–कलापों तथा वर्ष 2014–15 के लिए वार्षिक कार्य योजना पर चर्चा की गई। बैठक में भा.वा.अ.शि.प. के सभी संस्थानों के निदेशकों ने भाग लिया।

बी.टी.एस.जी.–भा.वा.अ.शि.प. ने वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून में सामान्य सुविधा केन्द्र की संरचना को सुदृढ़ करने के लिए रू. 4.00 लाख (अन्तिम किश्त) को वित्तीय सहायता प्रदान की। इस प्रकार भा.वा.अ.शि.प. की कुल सहायता रू. 50 लाख हो गई है।

व.अ.सं., देहरादून द्वारा दिनांक 30 और 31 जनवरी 2014 को "बांस प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पर शिल्पियों का व्यावहारिक प्रशिक्षण" तथा "वन तथा गैर–वनीय क्षेत्रों में बांस उत्पादकता" पर दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। दोनों क्रिया–कलापों को बी.टी.एस.जी.–भा.वा.अ.शि.प. द्वारा प्रायोजित किया गया। विभिन्न स्वालम्बी वर्गों तथा गैर सरकारी संगठनों के 30 से अधिक भागीदार कार्यक्रम में शामिल हुये।

का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर द्वारा दिनांक 17 से 21 मार्च 2014 तक शिल्पियों के लिए बांस हस्तशिल्प पर पांच दिनों का विशेषज्ञता प्रशिक्षण दिया गया। कार्यक्रम में दो शिल्पियों तथा दो विशेषज्ञ प्रशिक्षकों ने भाग लिया जो महबूब नगर (आन्ध्र प्रदेश), डेंकानीकोटी (तमिलनाडु), बैंगलोर, मैसूर, मालूर तथा कनकपुरा (कर्नाटक) से आये थे।

उ.व.अ.सं., जबलपुर द्वारा मध्य प्रदेश राज्य के बांस मिशन परामर्शी के तहत दिनांक 09 से 13 जून 2014 तक धूमा जिला, सेओनी में एवं दिनांक 16 से 20 जून 2014 तक बांस शिल्पियों के कौशल उन्नयन पर दो प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

व.व.अ.सं., जोरहाट द्वारा 30 जून 2014 को "बांस प्रसार एवं प्रबन्धन" पर जिला स्तर की कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्याशाला का आयोजन एफ.डी.ए., जोरहाट द्वारा राष्ट्रीय बांस मिशन व.व.अ.सं., जोरहाट के साथ संयुक्त रूप से किया गया। प्रशिक्षणार्थियों द्वारा संघटन केन्द्र का दौरा किया गया जहां उनके समक्ष बांस प्रशिक्षण की विभिन्न तकनीकों का प्रदर्शन किया गया। प्रशिक्षणार्थियों को बांस शिल्प के पहलुओं के बारे में बताया गया और उन्हें बांस की विभिन्न शुरूआतों के सम्बन्ध में जानकारियां दी गईं। कार्यक्रम में 28 प्रतिभागी शामिल हुये।

हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा हमीरपुर वृत्त राज्य वन विभाग, हि.प्र. के सहयोग से "बांस के बारे में किसानों की क्षमता वृद्धि" पर हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश में दिनांक 03 से 05 फरवरी 2014 तक तीन दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय बांस मिशन बी.टी.एस.जी. के तहत हि.प्र. में बांस की खेती बढ़ाना था।

हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा बांस के सम्बन्ध में किसानों की क्षमता वृद्धि पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम, हमीरपुर (हि.प्र.)

वन विज्ञान केन्द्र तथा प्रदर्शन ग्राम

व.व.अ.सं., जोरहाट द्वारा दिनांक 16 से 20 जून 2014 तक एन.बी.एम. के तहत "बांस प्रसार तथा प्रबन्धन" पर संयुक्त रूप से कार्यशाला का आयोजन किया। वन विभागों, कृषि विकास अधिकारियों, जे.एफ.एम. के अध्यक्ष तथा गोलाघाट, जोरहाट, शिवसागर, डिबरूगढ़ तथा तिनसुकिया जिलों के एन.जी.ओ. के सदस्यों ने कार्यशाला में भाग लिया।

बांस तथा बेंत उच्च अनुसन्धान केन्द्र, (बां.बें.उ.अ.के.) आईजॉल, व.व.अ.सं., जोरहाट के तहत एक केन्द्र द्वारा दिनांक 26 फरवरी से 04 मार्च 2014 तक वी.वी.के. प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 40 किसानों ने भाग लिया। किसानों को बांस की नर्सरी तकनीक, बांस चारकोल ब्राईक्वीटिंग तथा वेनीर बनाने की तकनीकें बताई गई।

उ.व.अ.सं., जबलपुर द्वारा वन विज्ञान केन्द्र, छत्तीसगढ़ में दिनांक 26 मार्च 2014 को "वन रोपणियों तथा वृक्षारोपणों के कीटों तथा रोगों का समन्वित प्रबन्धन" विषय पर तथा दिनांक 27 मई 2014 को रायपुर में "उन्नत नर्सरी तकनीक एवं कृषि वानिकी पर प्रशिक्षण" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

शु.व.अ.सं., जोधपुर में दिनांक 28 से 30 जनवरी 2014 तक वी.वी.के. बीकानेर तथा प्रदर्शन ग्राम, सलवास, जोधपुर के किसानों के लिए प्रशिक्षण का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में श्री आई. ए. मुगल, मुख्य वन संरक्षक ने वनों के महत्व पर जोर दिया। डॉ. टी. एस. राठौड़, निदेशक, शु.व.अ.सं. ने स्तरीय पौधों और अन्य वानिकी संक्रियाओं के लिए प्रौद्योगिकी के बारे में उल्लेख किया। प्रशिक्षण में चालीस प्रतिभागी शामिल हुये।

वन विज्ञान केन्द्र के साथ कृषि विज्ञान केन्द्र की नेटवर्किंग

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने दिनांक 21 मार्च 2014 को "वृक्षों की खेती की प्रौद्योगिकियां" पर कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी को तमिलनाडु तथा पुडूचेरी के कृषि विज्ञान केंन्द्रों को हस्तांतरित करने पर जोर दिया गया। डॉ. एन. कृष्णकुमार, निदेशक, व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर तथा डॉ. टी. मनोहरन, प्रॉफेसर, ई–विस्तार केन्द्र, टी.एन.ए.यू. ने पारिचयात्मक भाषण दिया। कार्यक्रम में तमिलनाडु तथा पुडूचेरी के.वी.के. के 26 भागीदार शामिल हुये। बैठक का आयोजन तमिलानाडु कृषि विश्वविद्यालय तथा तमिलनाडु वन विभाग के सहयोग से किया गया। समापन सत्र में भागीदारों ने वी.वी.के.–के.वी.के., को तमिलनाडु – केरल में सम्बद्ध करने और शाक्तिशाली बनाने पर जोर दिया। व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर वन विज्ञान केन्द्र और कृषि विज्ञान केन्द्र, केरल की पहली बैठक का आयोजन के.वी.के., थ्रिसूर में दिनांक 09 जनवरी 2014 को की गई।

का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर ने दिनांक 06 से 08 जनवरी 2014 तक "चन्दन आधारित कृषि वानिकी मॉडल" पर तीन दिन का प्रशिक्षण आयोजित किया, जिसमें के.वी.के. कर्नाटक के 30 तथा के.वी.के. गोवा के दो विशेषज्ञ भागीदार शामिल हुये। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य वी.वी.के. तथा आई.सी.ए.आर. के के.वी.के., जिन्हें विस्तार क्रिया–कलापों का अच्छा अनुभव है और जो सभी राज्यों में व्यापक रूप में फैले हुये हैं, में तारतम्य स्थापित करना था। इस कार्यक्रम में डॉ. साईराम, प्रधान वैज्ञानिक, जैड.पी.डी. मुख्य अतिथि रहे।

प्रकाशन

स्लेम – टी.एफ.ओ. ने स्लेम परियोजना पर एक फिल्म के साथ – साथ निम्नलिखित दस्तावेज प्रकाशित किये :

1. "स्लेम बेसलाईन रिपोर्ट : इसूज, चैलेंजैस एण्ड प्रोस्पैक्टस इन सस्टेनेबल लैंड एण्ड इको सिस्टम मैनेजमैंट"
2. "मॉनिटरिंग एण्ड इवैल्यूएशन इन्डीकेटर फ्रेमवर्क फॉर यू.एन.सी.सी.डी.–डैजेर्टीफिकेशन लैंड डीग्रेडेशन एण्ड ड्रोट"

3. सस्टेनेबल लैंड एण्ड इको सिस्टम मैनेजमैंट: सम बैस्ट प्रैक्टिसिस, फ्रॉम इंडिया

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने निम्नलिखित प्रशिक्षण मैनुअल्स तथा पुस्तिकायें प्रकाशित की

- "डायगोनोसिस ऑफ सॉइल फॉर प्रोडक्शन" ए.सी. सूर्य प्रभा, आर. एस. प्रशान्थ तथा एन. कृष्णकुमार 2014
- "एग्रोफॉरेस्ट्री मॉडल्स – एस्टैबलिसमैन्ट एण्ड मैनेजमैंट" श्री एस. सरवनन
- बटरफलाई डाईवर्सिटी आफ फॉरेस्ट कैम्पस

हि.व.अ.सं., शिमला ने निम्नलिखित लघु पुस्तिकायें प्रकाशित की :

- *पोडोफाईलम हेक्सेन्ड्रम* रॉयल
- अष्टवर्ग औषधीय पौधे
- *होस्कामस नाइजर*
- देवदार टॉल प्लांट
- फ्लावरिंग शर्ब ऑफ शिमला

प्रतिष्ठित व्यक्तियों के दौरे

श्री एलिक्सिस के मोपाम्पा, पश्चिमी कसाई प्रांत, कोंगो तथा मि. फ्रैंकोईस बी. नकुना, भारत में कांगो के राजदूत तथा उनकी टीम के सदस्यों ने दिनांक 12 अप्रैल 2014 को व. अ.सं., देहरादून का दौरा किया।

व.अ.सं., देहरादून में कोंगो के उच्चाधिकारियों का दौरा

श्री रकीबुल हुसैन, मंत्री, वन, पर्यावरण तथा पी. एण्ड आर.डी., असम ने दिनांक 26 अप्रैल 2014 को व.अ.सं., देहरादून का दौरा किया।

प्रौ. लियांग कुन्नान, प्रौ. झू जायेगी, डॉ. मा हुमिंग तथा डॉ. हुआंग ग्वीहुआ, अनुसन्धान संस्थान उष्णकटिबन्धीय वानिकी, चीन वानिकी अकादमी, चीन ने दिनांक 26 फरवरी 2014 को व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर का दौरा किया।

पादप संसाधन विभाग, वन एवं मृदा संरक्षण मंत्रालय, नेपाल सरकार के 14 वरिष्ठ अधिकारियों ने दिनांक 05 जून 2014 को हि.व.अ.सं., शिमला का दौरा किया। प्रतिनिधि मण्डल ने दोनों देशों के विभिन्न कृषि–जलवायुवीय क्षेत्रों में सहयोगात्मक अनुसन्धान परियोजनाओं के जरिये औषधीय तथा सुगन्ध पादपों का संरक्षण तथा ग्रामीण समुदायों के सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए प्रयोग करने की इच्छा व्यक्त की।

परामर्शी

- मार्च 2012 के दौरान भा.वा.अ.शि.प. को कर्नाटक के जिलों अर्थात बेल्लारी, तुमकुर तथा चित्रदुर्ग में एकल खनन् योजना के लिए पुनरूद्धार तथा पुनर्स्थापन के निर्माण का कार्य दिया गया। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान तेरह पुनरूद्धार तथा पुनर्स्थापन योजनायें तैयार की गई और केन्द्रीय सक्षम समिति (सी.ई.सी.) द्वारा स्वीकृत की गई। अब तक सी.ई.सी. को कुल तिरानवे आर.एण्ड आर. योजनायें दी गई हैं, जिनमें से 90 योजनायें अनुमोदित की गई है।
- हिमाचल प्रदेश विद्युत कॉर्पोरेशन के समक्ष चम्बा जिले में 48 एम.डब्ल्यू. सुरगानी सुन्डला जल–विद्युत परियोजना पर व्यापक पर्यावरण समाघात आकलन तथा पर्यावरणीय प्रबन्धन अध्ययन रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। परियोजना प्रभावित ग्रामीणों की लोक भागीदारी बैठक का आयोजन पंचायत तथा गांव सुन्डला, चम्बा जिला, हिमाचल प्रदेश में दिनांक 28 जून 2014 को किया गया जिससे उनके विचारों को रिपोर्ट में सम्मिलित किया जा सके।
- पश्चिमी भूटान की 180 एम.डब्ल्यू. बुनाखा जल विद्युत परियोजना को चुखा डोंगखाग में प्रस्तावित किया गया है, जिसे टिहरी जल विद्युत विकास कॉर्पोरेशन, ऋषिकेश भेजा गया। तत्पश्चात् इस रिपोर्ट को पर्यावरण आकलन तकनीकी समिति तथा पर्यावरण आकलन सलाहकार बोर्ड, राष्ट्रीय पर्यावरण आयोग, थिम्पू, भूटान में फरवरी 2014 में भेजा गया।
- ऊर्जा निदेशालय, हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा सतलज नदी घाटी में जल विद्युत विकास के पर्यावरणीय समाघात आकलन का कार्य दिया गया था, जिसे पूर्ण कर लिया गया है। प्रारूप अन्तिम रिपोर्ट जून 2014 के दौरान प्रस्तुत की गई है।

राजभाषा समाचार

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने दिनांक 25 फरवरी 2014 को राजभाषा हिन्दी पर प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया। मुख्य अतिथि श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने हिन्दी में कार्य करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होने कहा कि चीन, फ्रांस तथा जर्मनी आदि देशों के लोग दैनिक जीवन में अपनी मातृभाषा का प्रयोग करते हैं, जो उनकी उन्नति का महत्वपूर्ण कारक है। उन्होने भा.वा.अ.शि.प. के सभी कार्मिकों को हिन्दी में सरकारी काम करने हेतु प्रेरित किया।

भा.वा.अ.शि.प. में राजभाषा हिन्दी प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

कार्यशाला के मुख्य वक्ता डॉ. दिनेश चमोला, राजभाषा प्रभारी, भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून ने अक्षर का अर्थ समझाते हुये कहा कि अक्षर वह है जो कभी नष्ट नहीं होता है। उन्होने कहा कि हम भाषा को एक उपकरण के रूप में प्रयोग में ला रहे हैं, जिसके कारण हम शब्द की शक्ति से वंचित हो जाते हैं। उन्होने कहा कि भाषा को प्रभावशील बनाने के लिए हमें दूसरी भाषाओं के शब्दों को भी अपनाना चाहिए। श्री विवेक खाण्डेकर, भा.व.से.,स.म.नि. (मी. व वि.) ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होने कहा कि भाषा में प्रवाह होना चाहिए। कार्यशाला में भा.वा.अ.शि.प. के पचास से अधिक प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।

व.व.अ.सं., जोरहाट ने दिनांक 04 जून 2014 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया। डॉ. प्रवीण कुमार वर्मा, हिन्दी अधिकारी ने सभी कार्मिकों का स्वागत करते हुये कार्यशाला के उद्देश्यों के बारे में बताया।

देश की राजभाषा नीति के अनुपालन में का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर ने दिनांक 30 जून 2014 को वैज्ञानिकों तथा अधिकारियों के लिए राजभाषा केन्द्रित कार्यक्रम का आयोजन किया। डॉ. विजय थिलागम, हिन्दी अधिकारी, भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलोर ने संस्थान के दैनिक कार्यों में हिन्दी को बढ़ावा देने के महत्व पर प्रकाश डाला।

वार्षिक समीक्षा

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों में जारी अनुसन्धान परियोजनाओं की समीक्षा की और मूल्यांकन किया। परियोजनाओं को समय पर पूरा करने और उद्देश्यों को पूर्णतः प्राप्त करने के उपाय सुझाये गए।

वर्ष 2013–14 के दौरान भा.वा.अ.शि.प. द्वारा निधीयत 93 योजनाओं तथा 33 बाह्य सहायता प्राप्त परियोजनाओं को पूरा किया गया और भा.वा.अ.शि.प. योजना के अन्तर्गत 18 योजनाओं को निधिकृत किया गया तथा 8 बाहय सहायता प्राप्त परियोजनाओं की शुरूआत की गई। 2013–14 में भा.वा.अ.शि.प. के पास 293 अनुसन्धान परियोजनाएं जारी हैं जिनमें से 228 प्लान परियोजनाएं हैं तथा 65 परियोजनायें बाहय सहायता प्राप्त हैं।

अनुसन्धान नीति समिति की बैठक

दिनांक 6 से 8 मार्च 2014 को वन विज्ञान भवन, नई दिल्ली में भा.वा.अ.शि.प. के अधीन नौ अनुसन्धान संस्थानों द्वारा संस्तुत नये अनुसन्धान प्रस्तावों को अन्तिम रूप से अनुमोदित करने के लिए महानिदेशक, भा.वाअ.शि.प. की अध्यक्षता में पंद्रहवीं अनुसन्धान नीति समिति (आर.पी.सी.) की बैठक का आयोजन किया गया।

बैठक में आर.पी.सी. सदस्यों द्वारा 106 नये अनुसन्धान प्रस्तावों पर विचार किया गया जिसमें से रू. 13.38 करोड़ की नई 72 परियोजनायें शामिल थी। वर्तमान वर्ष की बजट आवश्यकताओं की अनुरूप रू. 4.11 करोड़ की योजनाओं को भा.वा.अ.शि.प. निधिकरण से अनुमोदित किया गया।

आर.पी.सी. द्वारा 168 जारी परियोजनाओं की समीक्षा की गई जिनका बजट पूंजी परिव्यय रू. 43.86 करोड़ रूपये था जो वर्तमान वर्ष की बजट आवश्यकता रू. 6.96 करोड़ की निरंतरता में था।

अनुसन्धान खोजें

- **व.अ.सं., देहरादून** में भौतिक रसायनिक पद्धतियों का उपयोग करते हुये नैनोसाईज के सैल्यूलोज तंतु तैयार किये गये। विभिन्न प्रकमण प्रक्रियाओं के जरिये नैनो सेलूलोज पार्टीकल विकसित किये गये। कागज के भौतिक गुणों में वृद्धि के लिए नैनो आकार का सेल्यूलोज आसंजक विकसित किया गया। इस तरह से बने आसंजक से कागज के गुणों में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई।
- **व.अ.सं., देहरादून** द्वारा चीड़ की सुइयों से हाथ से बने कागज की कम लागत वाली तकनीक विकसित की गई। हाथ से बने कागज विनिर्माण के लिए चीड़ की सुईयों को विभिन्न अनुपातों में गनी बैग्ज के साथ उपयोग में लाया गया।
- **व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर** द्वारा ई.सी.एच.के.टी.आई. के लिए आर.एन.ए.आई. साइलेंसिंग कन्सट्रक्ट विकसित किया गया।
- **का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर** ने पी.वी.सी. फ्यूजन प्रोपर्टी का अध्ययन किया और 175°C तथा 10 मिनट में क्रमशः प्रकमण तापमान और समय को उपयुक्ततम बनाया।
- **का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर** ने पी.वी.सी.– बायोफाईबरस (कोयर, बांस, रबर काष्ठ तथा बग्गेस) का रियोलॉजीकल अध्ययन पूरा किया। परिणामों से पता चला कि तंतु मात्रा से टारक्यु में वृद्धि होती है। इस अध्ययन से थर्मा प्लास्टिक – बायोफाईबर कम्पोजिटस को एक्सट्रडर में प्रक्रमित करने में सहायकता मिलती है।
- **का.वि.प्रौ.सं., बैगलोर** द्वारा किये गये अध्ययन से पता चला कि चेन्नई बंदरगाह में महत्वपूर्ण फाउलिंग ऑर्गेनिजम बारेंकिल्स, ब्रोजोन (इनक्रस्टिंग), हाइड्रोईडस तथा सर्प्यूलिडस है। अन्य फाउलिंग प्रजातियां थी एसीडियन्स, हाईड्रोईडस तथा ब्रोजोन्स। हल्दिया पोर्ट में, फाउलिंग बहुत कम था, जिसमें बारेंकिन्स, ब्रोजोन्स तथा सरप्यूलिड्स थे।
- **का.वि.प्रौ.सं., बैगलोर** के अध्ययन से चन्दन काष्ठ के दो नये तना छेदकों का पता चला यथाः *परप्यूरीस्नस संगियोनोलेन्टस-ओलीवियर, डेरूलस वालव्यूलस फेब्रीसयस* तथा *एक्सोसेंटस* प्रजा। तना छेदक *पी. संगियोनोलेन्टस* से *अकेशिया एरीक्यूलीफार्मिस* पादपों के साथ उगे चन्दन काष्ठ पादपों का भारी नुकसान हुआ।
- सिल्वी–हॉर्टी रोपणियों में चन्दन काष्ठ के बीजों को गंभीर नुकसान पहुँचाने वाले नये चन्दन काष्ठ बीज छेदन *एरासेरस फेसीक्यूलेटस* लिन्न (एन्थ्रीबाईडाई : कोलियोपेट्रा) का पता चला। कुल नुकसान लगभग 20 प्रतिशत हुआ।
- *सेस्बानिया ग्रेंडीफोलिया* के साथ उगे चन्दन काष्ठ के निष्पात्रक के रूप में नये वीविल्स अर्थात *पेल्टोट्रेचिलस कोगनेटस फास्ट, माइलोसेरस डिलीकैटुलस बोहेम्मन, एम. अन्डेसिम, एम. ट्रांसमैरीनस, डेरीयोडस विजीलन्स* तथा *डी. डेन्टीकोलिस* को रिकार्ड किया गया। लिपिडोपेट्रा की क्षेणी में आने वाले अन्य निष्पत्रक थे : आमाटा पेस्सालिस, माइक्रोनिया एक्यूलेट तथा पैरालीलिया प्रजाति।
- नव चयनित पादपों यथाः *लोबीलिया नाइकोटेनियाफोलिया* पत्तियां, *इरथ्रीना इन्डिका* बीज, *अकेसिया कोंकीन* पत्तियां तथा फलियां और *क्रोमोलिना ओडीराटा* पत्तियों पर का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर में अध्ययन किया गया जिससे पता चला कि टीक रोपणियों 5 प्रतिशत उपस्थिति होने पर टीक के बड़े कीटों से 50 प्रतिशत तक मृत्य होती है। इसके अलावा अपतृण लोबीलिया नाइकोटेनियाफोलिया का उपयोग करके द्रव सूत्रबद्धीकरण विकसित किया गया जो 6–7 दिनों तक अवशिष्ट निषाक्तता युक्त पाया गया और सेल्थ में रखने पर 8 महीने से अधिक समय तक सुरक्षित रहा। इसके परिणामों की तुलना नीम से की जा रही है। इसे नीम आधारित जैवकीटनाशकों की तरह उपयोग में लाने की संस्तुति की जा सकती है।

नई अनुसन्धान सुविधायें

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में 21 जनवरी 2014 जियोमेट्रिक्स प्रयोगशाला की स्थापना की गई जिसमें भौगोलिक सूचना पद्धति तथा सुदूर संवेदन सुविधायें शामिल है।

व.अ.सं., देहरादून में कंट्रोल स्थितियों में उन्नत कार्बन डाई आक्साईड तथा तापमान पर वृक्ष प्रजातियों के प्रतिउत्तर का अध्ययन करने के लिए केन्द्रीय सुविधा "ओपन टॉप चैम्बर सुविधा" स्थापित की गई। इस सुविधा की स्थापना जलवायु परिवर्तन पर अखिल भारतीय समन्वय परियोजना की छत्रछाया में की गई जिसका निधीकरण भा.वा.अ.शि.प., देहरादून द्वारा किया गया।

व.अ.सं., देहरादून स्थित ओपन टॉप चेम्बर

विविध

विश्व वन्यजीव दिवस

हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा दिनांक 03 मार्च 2014 को पश्चिमी हिमालय शीतोष्ण आर्बोटेरियम, पोटर्स हिल, शिमला के तहत स्थानीय डब्ल्यू.डब्ल्यू.एफ. तथा राज्य वन विभागों के वन्य जीव स्कंध के सहयोग से "विश्व वन्य जीव दिवस" मनाया गया।

विश्व वानिकी दिवस

व.अ.सं., देहरादून द्वारा दिनांक 21 मार्च 2014 को विश्व वानिकी दिवस मनाया गया। संस्थान के सूचना केन्द्र में प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान की उपलब्धियों को चित्रित करने वाले पोस्टर तथा मॉडल शामिल थे। प्रदर्शनी का उद्घाटन डॉ. पी. पी. भोजवेद, भा.व.से., निदेशक, व.अ.सं. द्वारा किया गया। प्रदर्शनी में भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान, देहरादून ने भी भाग लिया। इतना ही नहीं, इस अवसर पर व.अ.सं. के छः संग्रहलयों में निःशुल्क प्रवेश की सुविधा दी गई।

व.अ.सं., देहरादून में विश्व वानिकी दिवस के अवसर पर प्रदर्शनी

पृथ्वी दिवस

हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा दिनांक 22 अप्रैल 2014 को पश्चिमी हिमालय शीतोष्ण आर्बोरेटम, पाटर्स हिल, शिमला में "पृथ्वी दिवस का 44$^{वाँ}$ संस्करण" मनाया गया। कार्यक्रम में शिमला शहर के विभिन्न स्कूली बच्चों ने भाग लिया। उन्हें पर्यावरण से सम्बन्धित समस्याओं की जानकारी दी गई।

जैविक विविधता पर अन्तर्राष्ट्रीय दिवस

दिनांक 22 मई 2014 को भा.वा.अ.शि.प. के संस्थानों द्वारा जैवविविधता अन्तर्राष्ट्रीय दिवस (आई.बी.डी.) 2014 मनाया गया। आई.बी.डी. 2014 का उद्देश्य वर्ष 2014 के लिए संयुक्त राष्ट्र की की घोषणा के अनुसार द्वीपीय जैवविविधता को बनाये रखना तथा द्वीपीय जैवविविधता कार्यक्रम के तहत छोटे द्वीपों का संरक्षण करना था। **व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर** द्वारा आयोजित कार्यक्रम में तीन सौ से अधिक भागीदार थे जिनमें अधिकारी, वैज्ञानिक व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर तथा अन्य संस्थानों के कर्मचारी "राष्ट्रीय हारित फसल" के 88 सदस्य, कोयम्बटूर तथा त्रिपुर शैक्षिक जिलों के पारिक्लपों के सदस्य अपने सहयोगियों के साथ उपस्थित थे। तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय तथा आसपास के कॉलेजों के सदस्य, फॉरेस्ट कैम्पस नेचर क्लब के सदस्यों ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया। **उ.व.अ.सं., जबलपुर** में जैवविविधता संरक्षण के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए इस अवसर पर व्याख्यान, पेंटिंग और निबंध प्रतियोगितायें आयोजित की गई। **शु.व.अ.सं., जोधपुर** ने इस अवसर पर विभिन्न प्रजातियों के पौधों का रोपण किया गया और स्कूली छात्रों के लिए "द्वीपीय जैवविविधता" पर वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

व.व.अ.सं., जोरहाट द्वारा सरोजिनी देवी उच्च बालिका विश्वविद्यालय, केन्डुगड़ी, जोरहाट में क्विज तथा त्वारित वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। समारोह में **व.व.अ.सं., जोरहाट** के वैज्ञानिकों, अधिकारियों तथा सहायक स्टॉफ के साथ–साथ बड़ी संख्या में स्कूली विद्यार्थियों ने भाग लिया। **हि.व.अ.सं., शिमला** के विभिन्न स्कूलों के 30 विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे क्विज, पेंटिंग प्रतियोगिता तथा "द्वीपीय जैवविविधता" पर नारा लेखन, में भाग लिया। इस अवसर पर "जैवविविधताः आज के परिदृश्य में इसकी भूमिका" पर प्रस्तुतकीकरण किया गया। **व.उ.सं., रांची** में "द्वीपीय जैवविविधता" पर ड्राईंग तथा निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

विश्व पर्यावरण दिवस

व.अ.सं., देहरादून द्वारा दिनांक 05 जून 2014 को विश्व पर्यावरण दिवस तथा वन अनुसन्धान संस्थान दिवस का आयोजन किया गया। संस्थान के सूचना केन्द्र के आगे विशेष प्रदर्शनी लगाई गई। इस दिन जनता के लिए सभी संग्रहालयों में प्रवेश निःशुल्क था। **व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर** में इस अवसर पर वन परिसर में रोपण समारोह तथा ड्रॉइंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उ.व.अ.सं., जबलपुर में भी दिनांक 05 जून 2014 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर रोपण समारोह

इस अवसर पर **व.व.अ.सं., जोरहाट** द्वारा "रेंगोनी", जोरहाट आधारित एन.जी.ओ. सेसा सत्रा एम. वी. स्कूल, मोरी झांजी, जोरहाट (असम) के सहयोग से गाला कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमे 400 से अधिक भागीदार उपस्थित थे।

डॉ. अश्विनी कुमार, भा.वा.अ.शि.प. के नये महानिदेशक

डॉ. अश्विनी कुमार, भा.व.से. ने दिनांक 04 सितम्बर 2014 को भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद् के महानिदेशक के पद का कार्यभार ग्रहण किया। डॉ. अश्विनी कुमार भारतीय वन सेवा के यू.पी. संवर्ग के 1980 बैच के वन अधिकारी हैं।

संरक्षक :
डॉ. अश्विनी कुमार, महानिदेशक
सम्पादक मण्डल :
श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार) **अध्यक्ष**
श्रीमती नीना खांडेकर, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग) **मानद सम्पादक**
श्री रमाकान्त मिश्र, अनुसन्धान अधिकारी (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग) **सदस्य**

- "वानिकी समाचार" में प्रकाशित सामग्री सम्पादक मण्डल के विचारों को अनिवार्यतः प्रतिबिंबित नहीं करती है।
- प्रकाशन हेतु सामग्री मानद सम्पादक को प्रेषित की जा सकती है।
- डिजिटल संस्करण **www.icfre.gov.in** पर उपलब्ध है।

प्रेषक:
श्रीमती नीना खांडेकर
सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार)
विस्तार निदेशालय, भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248 006
ई–मेल : **adg_mp@icfre.org**
दूरभाष : 0135–2755221, फैक्स : 0135–2750693